प्राक्कथन

शताब्दियों की गुलामी से आजाद होकर भारत ने स्वर्णिम भविष्य का सपना देखा था लेकिन वर्तमान स्थिति को देखने पर उस सपने के क्षतिग्रस्त होने की कल्पना की जा सकती है। आज अनेक भयावह समस्याएँ विकराल रूप धारण कर के भारत के विकास में अवरोध उत्पन्न कर रही हैं। देश आज आर्थिक महासत्ता बनने के पथ पर मार्गस्थ है लेकिन विकास की इस होड़ में देश यह भूलता जा रहा है कि कुछ देश 'सांप्रदायिकता' के उत्पीड़न से भारत के प्रगति की गति को क्षीण कर रहे हैं। गरीबी, मँहगाई और बेरोजगारी के कारण देश में विषमता बढती जा रही है। मुक्त अर्थ-नीति और भूमंडलीकरण के कारण अनेक बहुराष्ट्रीय कपनियाँ भारत में आकर अपना वर्चस्व बना रही है। साम्राज्यवादी विदेशी शक्तियाँ नवपूँजीवाद का सहारा लेकर तथा उदारीकरण और निजीकरण की नीतियों को हथियार बनाकर देश की जनता के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रही है। साथ ही संगणकीकरण के कारण बेरोजगारी की समस्या अधिक जटिल बनती जा रही है। 'सेझ' अर्थात विशेष आर्थिक क्षेत्र के नाम पर, पवनचक्कियों के नामपर किसानों को भूमिहीन करके कृषि-संस्कृति को ध्वस्त करने का षड्यंत्र किया जा रहा है, जिससे कृषिप्रधान भारत देश में किसानों की आत्महत्याएँ उग्र रूप धारण कर रही है। इस समस्यामयी माहौल में देश की सरकार, जनता का यह उत्तरदायित्व बनता है कि वह इन समस्याओं से निजात पाने के लिए रचनात्मक प्रयास करें।

लेकिन स्थिति तो इसके विपरीत ही है। राजसत्ता पाने के लिए, कुर्सी पाने के लोभ में मंदिर-मस्जिद का मसला उछाला जा रहा है। देश की जनता के आंदोलन उनके जीने-मरने के सवालों पर न हो इसलिए धार्मिक कट्टरता को, पर धर्म द्वेष को, जातीय विद्वेष को फैलाया जा रहा हैं। हाजारों सालों से इस देश में बसे भाई-भाईयों के बीच भेदभाव, वैमनस्य की विष-बेली बोने का काम हमारे लोकतंत्र के प्रतिनिधि बखूबी कर रहे हैं। 'राष्ट्रवाद' के नाम पर देश की एक पंचमांश आबादी के मन में कटुता, आशंका और अलगाव की भावना पैदा कर रहे हैं। देश की प्रमुख समस्याओं को

नजरअंदाज करके देश के राजनेता घिनौने राजनीतिक हथकंडें अपनाकर देश में 'सांप्रदायिकता' की जडें मजबूत करने में लगे हुए हैं। 'सांप्रदायिकता' की त्रासदी ने भारत के सामने गंभीर सकट पैदा किये हैं। स्वतंत्रता पूर्व काल से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति तक 'सांप्रदायिकता' ने भारत को अनेक जख्म दिए हैं जो वर्तमान समय में नासूर बनकर रिस रहे हैं। 'सांप्रदायिकता' के गंभीर संकट से भारत को बचाने के लिए उसके खिलाफ रचनात्मक और सांस्कृतिक एकता का कार्य करना वर्तमान समय की माँग है। इस सामाजिक त्रासदी से हिंदी साहित्य भी अछूता नहीं रह सका। 'भारत विभाजन' एक ऐसा केंद्रबिंदु है जिससे हिंदी साहित्य प्रभावित रहा है। विवेच्य उपन्यास भी इस 'सांप्रदायिकता' की विद्‌ग्धता को सूक्ष्मता एवं सजीवता रेखांकित करते हैं। अतः इस त्रासदी से प्रभावित प्रत्येक भारतवासी को, साहित्यिकों को उससे निजात पाने के लिए प्रयत्न करना आवश्यक एवं अनिवार्य हैं। 'सांप्रदायिकता' को अभी रोकना होगा वरना इसका उग्ररूप भारत के बुनयादी विकास में रूकावटें पैदा करता रहेगा। 'सांप्रदायिकता' जैसे पतनकारी मूल्यों के समूल निर्मूलन के लिए न्यापक जनांदोलन की आवश्यकता है।

वर्तमान माँग के अनुसार 'सांप्रदायिकता' की पृष्ठभूमि पर इस असामाजिक उत्पीड़न की संकल्पना को स्पष्ट करने का हमने प्रयास किया है, जो इस समाज-विघातक त्रासदी से निजात पाने और समताधिष्ठित समाज निर्माण के लिए उपयोगी सिद्‌ध होगी।

✧ *शोध विषय का महत्त्व :*

1) 'सांप्रदायिकता' की संकल्पना को स्पष्ट करके सदियों से चली आ रही 'भारतीय संस्कृति' तथा 'धर्म' की समन्वयकारी भूमिका तथा महानता से परिचित करने के लिए –

2) 'धर्म' तथा 'राजनीति' की संकल्पना को स्पष्ट करके उनके बीच के भेद से परिचित करने के लिए –

3) 'सांप्रदायिकता' के अंतर-बाह्य स्वरुप का विवेचन करके इस मानसिक विकृति का मानवी जीवन, सामाजिक स्वास्थ्य पर होनेवाले दुष्परिणामों से परिचित करने के लिए –

4) नगरों–महानगरों की धूर्त राजनीति के कारण 'सांप्रदायिकता' का फैलता जहर ग्रामांचलों में नितांत नवीन है। विवेच्य उपन्यासों द्‌वारा ग्रामाचलों की भोली मानसिकता का लाभ उठानेवाले महानगरों के धूर्त लोगों की विकृत मनोदशा से परिचित करने के लिए –

5) 'सांप्रदायिकता' के दगें-फसादों में हो रहे नरसंहार, लूट-खसौट, आगजनी, बलात्कार आदि जघन्य अपराधों के कारण हो रहा मानवी जीवन–मूल्यों का विघटन तथा 'भारतीय आदर्श संस्कृति' के सामने उभरे गंभीर संकटों से परिचित करने के लिए –

6) राजनीतिक पार्टियों के हाथ का खिलौना बने आज के युवकों को उनके देश विधायक जिम्मेदारी एवं कर्तव्यों से परिचित करने के लिए –

7) समताधिष्ठित समाज रचना के लिए व्यापक जनांदोलन के द्वारा भारत के बुनयादी विकास में प्रत्येक भारतवासी के सहयोग की शक्ति से परिचित करने के लिए यह विषय नितांत अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण है।

✧ *शोध-प्रबंध का उद्देश्य :*

सदियों से भारत देश में 'धर्म' अपनी विशेष भूमिका निभाता आया है। मानवी सभ्यता, संस्कृति के परिचालन में 'धर्म' की विधायक भूमिका यहाँ के गौरवमयी इतिहास की साक्षी है। मनुष्य के समाजशील सद् आचार-विचार पर 'धर्म' का प्रभाव सदैव रहा है, लेकिन पिछले कुछ दशकों से 'भारतीय संस्कृति' तथा 'धर्म' अपने कल्याणकारी, मंगलकारी भूमिका से विचलित हो रहे हैं। राजनीति की शृंखला में बंद 'धर्म' आज 'सांप्रदायिकता' के उत्पीड़न का कारण बन चुका है।

देश की आजादी के 61 सालों के बाद भी भारतीय नागरिक 'सांप्रदायिकता' की विद्ग्धता से मुक्त नहीं हो सके हैं। 26 नवम्बर, 2008 को मुंबई पर हुआ आतंकवादी हमला 'सांप्रदायिकता' का ही प्रौढ़ रुप है, जो इस त्रासदी की प्रासंगिकता का गवाह है। आज भी देश के भीतर सांप्रदायिक ताकतों की खतरनाक भूमिका चल रही है। आम जनता मानवीय दृष्टिकोण की अपेक्षा मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारों तक अपना ध्यान सीमित रख रही है। 'धर्म' के नामपर लोग आज भी लड़ रहे हैं। कहीं पर भी उच्च सामाजिकता की अपेक्षा नहीं की जा सकती है, इससे सामाजिक सुरक्षा का मोहभंग हो रहा है।

स्वाधीनता के बाद भारत-पाकिस्तान विभाजन,अयोध्या का मंदिर-मस्जिद विवाद, कश्मीर सीमा विवाद, मुंबई में हुए बम-विस्फोट, गोधा हत्याकांड, संसद तथा अक्षरधाम मंदिर पर हुए आतंकवादी हमलें, देशभर में हुई सांप्रदायिक घटनाएँ आदि 'सांप्रदायिकता' का ही नतीजा है।

नगरों-महानगरों की इस समाज-विघातक समस्या ने अब ग्रामीण परिवेश को भी अपनी चपेट में लिया है। नगरों-महानगरों में बसे प्रजातंत्र के प्रतिनिधियों ने गाँव की जनता के भोलेपन का फायदा उठाकर 'वोट बैंक' को हासिल करने के लिए 'धर्म' का

हथियार के रुप में इस्तेमाल किया हैं। ग्रामीण परिवेश में प्रविष्ट हुई 'सांप्रदायिकता' की भीषणता तथा विद्‌ग्धता से भारतीय ग्रामांचल अपनी 'राम-राज्य'वाली अस्मिता खो रहे हैं। अतः विवेच्य उपन्यासों में इसी अनुभूति का यथार्थ चित्रण किया गया है। यह विषय आधुनिक संदर्भ में अनिवार्य एवं प्रासंगिक है। 'डूब, 'इदन्नमम' और 'मुखड़ा क्या देखे' इन तीनों ग्रामांचलिक उपन्यासों के विवेचन से बदलते ग्रामांचलों के बदलते जीवन-संदर्भ को दर्शाने का प्रयास किया गया है। इन रचनाओं के माध्यम से ग्रामीण परिवेश में दाखिल 'सांप्रदायिकता' की त्रासदी पर प्रकाश डाला गया है।

स्पष्ट है कि 'सांप्रदायिकता' की त्रासदी को प्रमुख विषय बनाकर अब तक स्वतंत्र रुप से अनुसंधान नहीं हुआ है। अतः "२० वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामीण उपन्यासों में सांप्रदायिकता" ('डूब','इदन्नमम' और 'मुखडा क्या देखें' के विशेष संदर्भ में) लघुशोध-प्रबंध द्‌वारा मेरा सविनय प्रयास रहा है कि ग्रामीण परिवेश को प्रभावित कर रही 'सांप्रदायिकता' की विद्‌ग्धता का विवेचन एवं विश्लेषण करके प्रबुद्‌ध पाठकों के सामने प्रस्तुत करुँ।

✧ *शोध-कार्य के दौरान उभरे प्रश्न :*

अनुसंधान के दौरान मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए थे, वे इसप्रकार हैं –

1) विकसनशील भारत देश के मानवी जीवन में 'धर्म' की भूमिका क्या होगी ?

2) मानवी जीवन में 'धर्म' और 'संप्रदाय' का परस्पर संबंध कैसे होगा ?

3) 'सांप्रदायिकता' की संकल्पना का अंतर-बाह्य स्वरुप कैसे होगा ?

4) 'सांप्रदायिकता' के उत्पीड़न के कारण क्या होंगे ?

5) भारत में 'सांप्रदायिकता' की त्रासदी कब से शुरु हुई होगी ?

6) 'राजनीति' और 'धर्म' का पारस्परिक संबंध कैसे जुडता गया होगा ?

7) धार्मिक शिक्षा ने 'सांप्रदायिक' तनावों को बढावा देने का काम किया होगा ?

8) ग्रामांचलों के बदलते परिवेश ने शहरों, महानगरों की 'सांप्रदायिकता' का अनुकरण कैसे किया होगा ?

9) 'सांप्रदायिकता' की त्रासदी के परिणाम और उसके समूल निर्मूलन के रचनात्मक उपाय कौन-से होगें ?

10) विवेच्य उपन्यासों में रचनाकारों ने ग्रामांचलों के परिवर्तित रुप तथा 'सांप्रदायिक विद्‌ग्धता' का चित्रण कैसे किया होगा ?

उपर्युक्त इन सभी प्रश्नों से प्राप्त हुए उत्तर प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध के 'उपसंहार' में दिए गए हैं।

✧ *शोध विषय का स्वरुप और व्याप्ति :*

लघुशोध-प्रबंध की सीमा निश्चित हो तो शोध कार्य सही दिशा में होता है। इसी नियम को ध्यान में रखते हुए मैंने प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध की सीमा निश्चित की है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने लघुशोध-प्रबंध को चार अध्यायों में विभाजित किया हैं।

✧ *प्रथम अध्यायः "'सांप्रदायिकता' – परिभाषा, स्वरूप एवं स्वतंत्रता पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर सांप्रदायिक परिवेश"*

प्रस्तुत अध्याय में 'सांप्रदायिकता' की परिभाषाएँ, 'सांप्रदायिकता' का स्वरूप, स्वतंत्रता पूर्व काल का सांप्रदायिक परिवेश, स्वातंत्र्योत्तर सांप्रदायिक परिवेश तथा 20 वीं सदी के अंतिम दशक का सांप्रदायिक परिवेश आदि का संक्षिप्त, वस्तुनिष्ठ विवेचन तथा विश्लेषण किया हैं। 'सांप्रदायिकता' की संकल्पना का अंतर-बाह्य स्वरूप स्पष्ट करके मुगल शासन काल का भारत, सन् 1857 की जंग, भारत-पाक विभाजन, गांधी हत्या, अयोध्या का मंदिर-मस्जिद विवाद, कश्मीर सीमा-विवाद, मुंबई में हुए बम-विस्फोट, वांशिक भेद तथा आरक्षण-नीति के कारण सांप्रदायिक तनाव, बाबरी कांड आदि महत्त्वपूर्ण घटनाओं के द्‌वारा सांप्रदायिक परिवेश का विवेचनात्मक विश्लेषण करके यह दिखाया है कि भारत में 'सांप्रदायिकता' आज की नहीं, सदियों से सांप्रदायिकता का जहर भारत-भूमि को पीड़ा पहुँचाता आ रहा है।

✧ *द्‌वितीय अध्यायः "20 वीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों की ग्रामांचलिक विकास यात्रा"*

प्रस्तुत अध्याय में स्वतंत्रता पूर्व ग्रामांचलिक उपन्यास–साहित्य,सन् 1960 से सन् 1975 तक का ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य, सन्1975 से सन् 1990 तक का परिवर्तित ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य, 20वीं सदी के अंतिम दशक का ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य आदि कालखंड के हिंदी ग्रामांचलिक उपन्यास-साहित्य के द्‌वारा ग्रामांचलिक जीवन की विकास यात्रा का पथिक बनने का प्रयास किया है। विवेच्य

कालखंड में ग्रामीण–जीवन में विकास के पड़ावों को दिखाकर ग्रामीण–समाज जीवन, नारी शोषण, किसान–मजदूरों का शोषण, जातीय भेदभाव, सांप्रदायिकता की विद्‌ग्धता, ग्रामगंदी राजनीति, ग्रामीण–जीवन में विकास के साथ आई हुई विकृतियाँ आदि के साथ–साथ नारी अस्मिता, ग्राम–सुधार की चेतना आदि का विवेचनात्मक विश्लेषण करके अंत में यह स्पष्ट कर दिया है कि आजादी के बाद सन् 1954 के आस–पास रेणु के 'मैला आँचल' से यह धारा फूट पडी,जो आज तक विकास के अनेक पड़ावों को पार करती–करती आज परिवर्तित ग्रामीण–जीवन का चित्रण यह धारा करने लगी हैं।

✧ *तृतीय अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों का विवेचनात्मक विश्लेषण"*

प्रस्तुत अध्याय में वीरेंद्र जैन के 'डूब' (1991),उपन्यास का विवेचनात्मक विश्लेषण, मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम' (1994),उपन्यास का विवेचनात्मक विश्लेषण और अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'मुखडा क्या देखे' (1996), उपन्यास का विवेचनात्मक विश्लेषण करके ग्रामीण–जीवन में व्याप्त अवैध–यौन संबंध, किसान–मजदूरों का शोषण, जातीय एवं धार्मिक भेदभाव, भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था, विस्थापन की समस्या, ग्रामगंदी राजनीति,शोषण के खिलाफ चेतना का स्वर, ग्रामीण–जीवन में फैली विकृतियाँ आदि ग्रामीण–जीवन के विविध पक्षों की तलाश करके यह दिखाया है कि विवेच्य उपन्यासों में ग्रामीण–जीवन के विविध पहलुओं के दर्शन होते हैं। ग्रामीण–जीवन में जातीय भेदभाव और सांप्रदायिकता की विद्‌ग्धता ने ग्रामीण आँचलिक जन–जीवन को ध्वस्त कर दिया है।

✧ *चतुर्थ अध्याय : 'हिंदी के विवेच्य ग्रामांचलिक उपन्यासों में चित्रित सांप्रदायिकता'*

प्रस्तुत अध्याय में हिंदुस्थान के बँटवारे के कारण सांप्रदायिकता को मिली बढ़ोतरी, भारत में हुए विभिन्न सांप्रदायिक दगें, सांप्रदायिकता के जन–जीवन पर होनेवाले दुष्परिणाम, सांप्रदायिकता को रोकने के उपाय, विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सांप्रदायिकता आदि का विवेचनात्मक विश्लेषण करने के बाद यह दिखाया है कि 'सांप्रदायिकता' का जहर ग्रामांचलों में नितांत नवीन है। ग्रामांचलों की भोली मानसिकता का लाभ उठाकर धूर्त राजनेता ग्रामांचलों की 'ग्राम–संस्कृति' पर आघात कर रहे हैं। अतः विवेच्य उपन्यासों में सांप्रदायिक वारदातें तथा घटनाओं द्‌वारा ग्रामांचलों में उभरे सांप्रदायिक तनाव तथा परस्पर मनमुटाव का चित्रण किया है। अंत में यह दिखाया है कि

शहरों से,महानगरों से ग्रामांचलों में प्रविष्ट हुई 'सांप्रदायिकता' की विद्‌ग्धता ने खुशहाल ग्राम–जीवन को ध्वस्त कर दिया है।

✧ *उपसंहार :*

प्रस्तुत लघुशोध–प्रबंध में पूर्व विवेचित तथा नियोजित अध्यायों के वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन करने के पश्चात् जो वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष उपलब्ध हुए उनको 'उपसंहार' के रुप में दर्ज किया है। अंत में परिशिष्ट और संदर्भ ग्रंथ–सूची दी हैं।

✧ *शोध–कार्य की मौलिकता :*

1) "20 वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामीण उपन्यासों में सांप्रदायिकता" ('डूब', 'इदन्नमम' और 'मुखडा क्या देखे' के विशेष संदर्भ में) इस विषय पर किया गया अनुसंधान पूर्णतः मौलिक है क्योंकि ग्रामांचलों की सांप्रदायिक त्रासदी पर स्वतंत्र रुप से अब तक अनुसंधान नहीं हुआ है। यह लघुशोध–प्रबंध इस अभाव की पूर्ति की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है।

2) महानगरों से प्रवाहित होकर ग्रामीण परिवेश को प्रभावित कर रही 'सांप्रदायिकता' की त्रासदी ग्रामांचलों में नितांत नवीन है। इस दृष्टि से विवेच्य उपन्यासों में चित्रित सांप्रदायिकता का चित्रण इसको यथार्थ रुप प्रदान करता है। अतः इस दृष्टि से भी यह विषय मौलिक है।

3) विकास तथा आर्थिक महासत्ता बनने की होड़ में भारत 'सांप्रदायिकता' के उत्पीड़न की ओर नजरअंदाजी का रवैया अपना रहा है। भारत के बुनयादी विकास तथा 'सांप्रदायिकता' के समूल निर्मूलन के लिए रचनात्मक एवं आंदोलनात्मक कार्य करना वर्तमान समय में अनिवार्य एवं आवश्यक है, अतः इस दृष्टि से भी यह विषय मौलिक है।

4) 26 नवम्बर, 2008 में मुंबई पर हुए आतंकवादी हमलें इसी 'सांप्रदायिकता' की मानसिक विकृति का प्रौढ़ रुप है। वर्तमान समय की माँग के अनुसार यह विषय नितांत मौलिक एवं प्रासंगिक है।

5) मानवी मूल्य–विघटन के गंभीर संकट को पहचानकर धर्मों–धर्मों के बीच समन्वयकारी भूमिका अपनाना वर्तमान समय की माँग है। सांस्कृतिक एकता, भाषिक एकता एवं प्रांतीय एकता के द्‌वारा समताधिष्ठित समाज निर्माण करने की दृष्टि से यह विषय मौलिक एवं अनिवार्य है।

6) 20 वीं सदी के अंतिम दशक के ग्रामीण उपन्यासों में भारत के बदलते ग्रामांचलों की तस्वीर पूर्ण रुप से स्पष्ट होती है। बदलते जीवन मूल्य तथा ग्राम–अस्मिता को स्पष्ट करने में विवेच्य उपन्यास सशक्त एवं कारगर है अतः 20 वीं सदी के अंतिम दशक के भारतीय ग्रामांचलों की वर्तमान परिवर्तित स्थिति को जानने की दृष्टि से भी यह विषय मौलिक है।

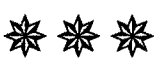

ऋणनिर्देश

२६ नवम्बर, २००८ को मुंबई में हुए आतंकवादी हमलें 'सांप्रदायिक' त्रासदी का प्रौढ़ रुप है,जो धर्मांध शक्तियों का विकृत नतीजा है । 'सांप्रदायिकता' की प्रासंगिकता वर्तमान समय में विश्व के विशाल प्रजातांत्रिक देश भारत के आगे चुनौतियाँ पैदा कर रही है । अतः 'सांप्रदायिकता' का विवेचनात्मक विश्लेषण करना वर्तमान समय की माँग है । मैं स्वयं को भाग्यशाली समझता हूँ कि मुझे प्रासंगिक विषय पर शोध-कार्य करने का अवसर मिला,जो मुझे समताधिष्ठित समाज एवं भारत निर्माण करने के लिए किए जानेवाले अविरत प्रयास से जोडता है । प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से सहायता करनेवाले गुरुजनों,हित-चिंतकों तथा महानुभावों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मै अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

मेरे लघुशोध-प्रबंध के दिशा-निर्देशक श्रद्धेय, गुरुवर्य डॉ. क्षितिज यादवराव धुमाळ जी के बहुमोल निर्देशन की यह फलश्रुति है । उनके तत्त्व-चिंतक, अध्ययनशील कुशल निर्देशन एवं स्नेहपूर्ण सहयोग से ही मैं अपना अनुसंधान कार्य पूर्ण कर सका। अतः मैं उनका चीर ऋणी रहूँगा । साथ ही डॉ. यादवराव धुमाळ जी के ऋषितुल्य व्यक्तित्त्व के सहवास और चिंतनशील मार्गदर्शन से विधायक दृष्टि प्राप्त हुई,जो शोध-प्रबंध की चेतना बनी । अतः मैं उनके प्रति भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ और भविष्य में भी उनके मार्गदर्शन की अभिलाषा रखता हूँ । गुरुमाता सौ. नयना धुमाळ, गुरुपत्नी सौ. रेखा धुमाळ, गुरुबहन सौ. शर्वरी शिंदे, चि.उत्कर्ष धुमाळ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने पारिवारिक माहौल प्रदान करके शोध-प्रबंध की पूर्ति के लिए सदैव प्रोसाहित किया ।

शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.पद्मा पाटील, प्रोफेसर डॉ.अर्जुन चव्हाण तथा अधिव्याख्याता डॉ.शोभा निम्बालकर आदि ने मुझे सदैव प्रेरणा एवं दिशा-निर्देश दिए । अतः उनके प्रति आभार प्रकट करना मेरा कर्तव्य समझता हूँ ।

साथ ही एल्.बी.एस्.कॉलेज सातारा, के आदरणीय प्राचार्य, सुहास साळुंखे, हिंदी विभागाध्यक्ष आदरणीय डॉ.भरत सगरे, प्रा.जयंत जाधव सर आदि से समय-समय पर मिले मौलिक मार्गदर्शन से मेरी उम्मीद और जिज्ञासा बढती रही । अतः मैं उनका चीर ऋणी रहूँगा ।

साथ ही मेरी आदरणीय गुरुवर्या डॉ. माधवी जाधव जी का मुझे हमेशा मौलिक एवं आत्मिक मार्गदर्शन मिलता रहा है । बाबासाहेब नदाफ सर,सहमंत्री राष्ट्र सेवा दल , आदरणीय श्री.उमेश कोळी सर, महेश दायमा सर जी से मिले मौलिक मार्गदर्शन के कारण लघु शोध-प्रबंध में निरंतर जुट सका ।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी माताजी सौ.विजया, पिताजी श्री. शंकर साळुंखे जी से मिले ममतामयी स्नेह से मैं दुगनी ऊर्जा प्राप्त करता गया । साथ ही बड़े भाई शशिकांत और भाभी सौ.सोनाली साळुंखे तथा छोटी बहन कु. गीता का संगीतमयी सहवास सदैव उत्साहित करता रहा ।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध को गति प्रदान करनेवाले मेरे 'स्नेहांकित' सुनय चव्हाण, मोनिका कदम, मनिषा भोसले, संजय रेंदाळकर, धन्यकुमार गुरव,नितीन गायकवाड, शरद पवार, अनिल करे-कांबळे, शितल पुणेकर, संतोष कोळेकर आदि ने हमेशा सहायता करके मेरे डगमगाते हौसले को ऊर्जा प्रदान करके शोध-प्रबंध में निरंतर बनाये रखा । इन सभी का मैं हृदय से आभारी हूँ ।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध लेखन के दौरान अनेक विद्वानों,लेखकों के मौलिक विचारों तथा उनकी रचनाओं की मुझे सहायता मिली । अतः मैं उनका चीर ऋणी रहूँगा । शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल और कर्मचारी एल्. बी. एस्. कॉलेज सातारा, ए.एस्.सी.कॉलेज इचलकरंजी, समाजवादी प्रबोधिनी, इचलकरंजी के ग्रंथपाल और उन सभी कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ,जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से सहायता करके मेरे लघु शोध-प्रबंध में विशेष भूमिका निभाई । अतः उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध का आत्मीयता और तत्परता से सुचारु रुप से टंकन करनेवाले श्री.प्रशांत भोसले का मैं सदैव आभारी रहूँगा ।

अतं में सभी गुरुजनों,आत्मजनों की प्रेरणा तथा सदिच्छाओं के लिए धन्यवाद देकर इस लघुशोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

स्थान : सातारा

तिथि : 30 अप्रैल, २००९

अनुसंधानकर्ता

श्री. संतोष शंकर साळुंखे